स्व-चितंन उन्नति की सीढ़ी - शंकराचार्य जयेंद्र सरस्वती

माउंट आबू, 7 जून कांची कामकोटि पीठ के 69वें शंकराचार्य जगतगुरु स्वामी जयेंद्र सरस्वती जी महाराज ने कहा है कि आत्मदर्शन करने से ही परमात्मा के सानिध्य का अनुभव किया जा सकता है। यह बात उन्होंने ब्रह्माकुमारी संस्थान के अंतराष्ट्रीय मुख्यालय पाण्डव भवन परिसर स्थित ओम् शांति भवन के सार्वभौमिक शांति सभागार में आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए कही।

उन्होंने कहा कि ब्रह्माकुमारी संस्थान की ओर से ग्रामीण जनता में आध्यात्मिक जागृति लाने का कार्य सराहनीय ही नहीं बल्कि अनुकरणीय भी है। इस कार्य को गतिमान बनाने के लिए हम संस्थान के साथ मिलकर पूरा सहयोग देने में तत्पर रहेंगे। स्व-चितंन उन्नति की सीढ़ी इस संस्थान का जो मूल मंत्र है वही आदि शंकराचार्य ने भी सन्यास धर्म की स्थापन करने के लिए दिया था। जिसे लेकर आज पूरा सन्यास समुदाय कार्यरत है। शरीर, इंद्रियों, विषय-वस्तुओं का अभिमान ही मनुष्य को पतन की ओर ले जा रहा है। ऐसी स्थिति से उभरने के लिए आत्मविवेक को जागृत करने की जरूरत है।

संस्थान की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी ने कहा कि भारत को सुखमय बनाने के लिए आध्यात्मिक संगठनों में एकता होना आवश्यक है। सहजराजयोग के माध्यम से मनुष्य अपनी कर्मेन्द्रियों पर नियंत्रण रख सकता है। परमात्मा से मन की तार जुड़ने से उसकी शक्तियों का आत्मा में संचार होने लगता है जिससे मन में समाज के सभी वर्गों के लिए कल्याणकारी भावनाओं का उदय होता है। ऐसी मनोस्थिति से ही समाज को एकता के सूत्र में पिरोने के कार्य को सफलतापूर्वक संपन्न किया जा सकता है। मजूबत मनोबल होने से किसी भी असंभव कार्य को संभव करने में कोई बड़ी से बड़ी परिस्थिति भी बाधा नहीं बन सकती।

इस अवसर पर संस्थान की सहमुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, राजयोग शिक्षिका बीके शशि बहन, बीके शीलू बहन, वीना बहन, शिक्षा प्रभाग उपाध्यक्ष बी के मृत्युंजय भाई ने भी विचार व्यक्त किए।

इससे पूर्व शंकराचार्य ने पाण्डव भवन का अवलोकन किया। जिसके तहत पांडव भवन पहुंचने पर ब्रह्माकुमारी संस्थान की सहमुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, राजयोग शिक्षिका मुन्नी बहन समेत संस्थान के पदाधिकारियों ने उनका स्वागत किया। उन्होंने बह्मा बाबा के समाधि स्थल शांति सतंभ, बाबा के कमरे का भी अवलोकन किया।